RESEARCH PAPER | Education | Volume : 4 | Issue : 6 | June 2014 | ISSN - 2249-555X

Gwalior ke Shaskiya v Ashaskiya Vidhyalayo ke Pratibhashali Vidhyarthiyo ki Apne Mata-Pita v Sikshako se Apeshao ka Tulnatmak Adhyayan

ग्वालियर के शासकीय व अशासकीय विद्यालयों के प्रतिभाशाली विद्यार्थियों की अपने माता–पिता व शिक्षकों से अपेक्षाओं का तुलनात्मक अध्ययन।

KEYWORDS: प्रतिभाशाली बालक, अपेक्षायें, शासकीय, अशासकीय।

Uma Jain | Dr. Sanjeev Jain

ABSTRACT प्रतिभाशाली बालक प्रत्येक क्षेत्र में औसत बालक से अधिक तीव्र, बुद्धिमान, शारीरिक स्फूर्ति वाले एवं जीवन में अधिक सफलता पाने वाले होते हैं। ऐसे प्रतिभाशाली बालक अपने माता–पिता व शिक्षकों से विशिष्ट प्रकार की अपेक्षायें रखते हैं। इस अनुसंधान पत्र में प्रतिभाशाली बालक की अपने माता–पिता व शिक्षकों से अपेक्षाओं का अध्ययन किया गया जिसमें ग्वालियर शहर के शासकीय व अशासकीय विद्यालयों के प्रतिभाशाली विद्यार्थियों की माता–पिता व शिक्षकों से अपेक्षाओं का अध्ययन किया गया है। प्रतिभाशाली बालकों की अपेक्षाओं का अध्ययन करने के लिये सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। प्रस्तुत अध्ययन में 400 विद्यार्थियों पर बुद्धि परीक्षण का प्रयोग किया गया फलस्वरूप 100 प्रतिभाशाली विद्यार्थियों का चयन किया गया। इन प्रतिभाशाली विद्यार्थियों पर स्वनिर्मित प्रश्नावली अपेक्षा परीक्षण का प्रयोग किया गया तथा निष्कर्ष स्वरूप पाया गया कि शासकीय व अशासकीय प्रतिभाशाली बालकों की माता–पिता व शिक्षकों से अपक्षाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। स्पष्ट है कि प्रतिभाशाली बालकों की अपेक्षाओं का शासकीय व अशासकीय विद्यालयों के होने का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। अतः बालकों की अपेक्षाओं को समझकर उनके नैतिकमूल्यों तथा क्रियात्मक, रचनात्मक, क्षमता का विकास भलीं भाँति किया जा सकता है।

प्रस्तावना :

किसी भी छात्र की अनेक छोटी बड़ी अपेक्षाऐं अपने माता–पिता, एवं घर परिवार से होती हैं। उसके पष्चात् वह स्कूल, या विद्यालय के सम्पर्क में आता है और वह अपने ग्रहण करने की क्षमता के अनुसार अपने अध्यापकों व अपने गुरूजनों से अपेक्षा करने लगता है कि वह उसके सभी प्रष्नों का उचित व धैर्यपूर्ण उत्तर दें ताकि वह अपनी समझ को और विकसित कर सके। इसी प्रकार धीरे – धीरे विद्यार्थी अपने को विकसित करनें के लिये बचपन में सबसे पहले अपने घर परिवार व माता–पिता से अपेक्षायें रखता हैं उसके बाद वह अपने षिक्षकों से अपेक्षायें रखता है।

Rosow (1985) - " Expectations about the requirement of roles , such as that of family authority or nurturing, parents become less clear to the elderly themselves, as well as to others."

प्रतिभाषाली बालक अपनी विषेष क्षमताओं का सही दिषा में प्रयोग करें इसके लिए माता–पिता व षिक्षकों को प्रतिभाशाली बालकों की समस्याओं व उनकी आकांक्षाओं को समझकर उन्हें सही दिषा में मार्गदर्षन करना होगा।

प्रत्येक विद्यालय में षिक्षा प्राप्त करने के लिये अनेक ऐसे बालक आते है जिनकी अपनी कुछ षारीरिक और मानसिक विषेशतायें होती है, इन्हें प्रतिभाषाली बालक कहते है।

क्रो एण्ड क्रो के अनुसार ''वह बालक जो मानसिक, षारीरिक, सामाजिक और संवेगात्मक आदि विषेशताओं में औसत से विषिश्ट हो और यह विषिश्टता इस स्तर की हो कि उसे अपनी विकास क्षमता की उच्चतम सीमा तक पहुंचने के लिये विषेश प्रषिक्षण की आवष्यकता हो असाधारण या विषिश्ट बालक कहलाता है।''

टरमन व ओड़न के अनुसार – ''प्रतिभाषाली बालक षारीरिक गठन, षारीरिक समायोजन, व्यक्तित्व के लक्षणों, विद्यालय उपलब्धि, खेल की सूचनाओं और रूचियों की बहुरूपता में सामान्य बालकों से बहुत श्रेश्ठ होते है''

स्किनर तथा हैरीमैन के अनुसार – प्रतिभाषाली बालकों में निम्नलिखित प्रकार की विषेशतायें पाई जाती हैं

- विषाल षब्द कोश ।
- मानसिक प्रक्रिया की तीव्रता ।
- दैनिक कार्यो में विभिन्नता ।
- सामान्य ज्ञान की श्रेश्ठता ।
- सामान्य अध्ययन में रूचि ।
- अध्ययन में अद्वितीय सफलता ।
- अमूर्त विशयों में रूचि ।
- आष्चर्यजनक अन्तर्दृश्टि का प्रमाण ।
- मंद बुद्धि व सामान्य बालकों से अरूचि ।
- पाठ्य विशयों में अत्यधिक रूचि व अरूचि ।
- विद्यालय के कार्यो के प्रति बहुधा उदासीनता ।
- बुद्धि–परीक्षाओं में उच्च बुद्धिलब्धि (130 से 170 तक) ।

उपर्युक्त विषेशताओं के आधार पर हमें यह ज्ञात होता है कि प्रतिभाषाली बालक विषेश बुद्धि वाले होते है। इसी कारण उनकी अपने पालकों और षिक्षकों से अपेक्षायें भी अधिक होती है।

प्रतिभाषाली बालकों की अपने माता–पिता और षिक्षकों से अपेक्षायें

प्रतिभाषाली बालक अपने को विकसित करने के लिये अपने घर– परिवार, माता–पिता तथा षिक्षकों से अपेक्षाऐं रखता है।

प्रतिभाषाली बालकों की अपने माता–पिता से अपेक्षायें :

1) परिजनों का आवष्यक ध्यान – छात्र जीवन से संबंधित सभी जरूरतों के लिये अपने माता–पिता से ही अपेक्षा करता है और माता–पिता की भी ये जिम्मेदारी है कि वह अपने बच्चे की सभी जरूरतों पर ध्यान दें तथा वह अपने परिजनों से सही उत्तर की भी अपेक्षा करता है। प्रतिभाषाली बालक अपने परिजनों से सही उत्तर की अपेक्षा रखता है और चाहता है कि उसके माता–पिता उसके प्रष्न का संतोशजनक उत्तर दें। परंतु आवष्यक है कि वह उत्तर बच्चें की जिज्ञासा बढायें न कि उसके प्रष्नों को विराम दें ।
2) उत्साहवर्धन की अपेक्षा –प्रतिभाषाली छात्र अपने माता–पिता से पूछे गये अपने प्रष्न या किसी प्रष्न के लिये दिये हुए अपने उत्तर के लिये अपने माता–पिता से अपने उत्साहवर्धन की उम्मीद करता है, और यह माता–पिता का अपने पुत्र या पुत्री के लिये कर्तव्य है, कि वह अपने बच्चे के पूछे हुए प्रष्न की सराहना करें और उसका सही उत्तर दें।
3) हमेषा बालक को छोटे होने की दृश्टि से नही देखना चाहिए – माता–पिता हमेषा अपने बच्चे को बच्चे की दृश्टि से ही देखते है। परंतु ये हमेषा उचित नही है– प्रतिभाषाली छात्र किन्हीं मायनों में अपने परिवारजनों से भी ज्यादा उचित और समझदारी वाली बात कह रहा हो । इसलिये वह अपने माता–पिता से अपेक्षा करता है कि कभी–कभी उसकी बात को भी महत्व दिया जाये और माता–पिता का भी यह फर्ज है कि वह अपने बच्चे की बात को महत्व दें। यह बच्चे की सोच को नया आयाम देगा।

प्रतिभाषाली बालकों की अपने षिक्षकों से अपेक्षायें

1) उचित अवसर देने की अपेक्षा –किसी भी प्रतिभाषाली छात्र को अपने षिक्षकों से उचित अवसर की अपेक्षा रहती है। छात्र अपेक्षा करता है कि उसके गुरूजन उसे अपनी प्रतिभा को प्रदर्षित करने का अवसर अवष्य देंगे। षिक्षकों का भी यह कर्तव्य है कि वह अपने छात्र को समझे, उसकी प्रतिभा को पहचाने तथा उसको उचित अवसर दे,
2) छात्र के द्वारा पूछे गये प्रष्न को महत्व मिले – छात्र अपेक्षा करता है कि जब वह मेहनत से पढता है और प्रतिभासंपन्न है तो वह जो प्रष्न कर रहा है वह भी महत्वपूर्ण है और गुरूजनों का यह कर्तव्य है कि वह अपने छात्र की प्रतिभा का ह्रास न करे और उसके द्वारा पूछे गये प्रष्न को महत्व दें।
3) आजादी प्रष्न पूछने की – छात्र अपने षिक्षकों से आषा करता है कि उसके गुरूजन उसे किसी भी प्रकार से प्रष्न पूछने की स्वतंत्रता दे और षिक्षक को ऐसा करना भी चाहिए तभी छात्र के मस्तिश्क का उचित विकास संभव है। छात्र की प्रतिभा उसके द्वारा पूछे गये प्रष्नों से विकसित होती है। छात्र की प्रतिभा को विकास मिले। यह एक प्रतिभाषाली छात्र की महत्वपूर्ण अपेक्षाओं में से एक है।
4) स्वतंत्रता अपने विचार रखने की – प्रतिभाषाली छात्र जब प्रष्न करता है तो वह उत्तरविहीन नही होता बल्कि वह अपने षिक्षक से अपने उत्तर की पुश्टि करवाने के लिये प्रष्न पूछता है और यदि उसे अपने उत्तर की पुश्टि नही होती तो वह अपने विचार अपने षिक्षक के सामने रखने की स्वतन्त्रता चाहता है तथा आषा करता है कि उसकी उचित सोच को नया आयाम मिले।

इस प्रकार एक प्रतिभाषाली छात्र अपने षिक्षकों से स्वतंत्रता की अपेक्षा करता है।

Volume : 4 | Issue : 6 | June 2014 | ISSN - 2249-555X

Goyar, P.G. (1990) ने अपने अनुसंधान में पाया कि अभिभावक आषा करते हैं कि षिक्षक प्रतिदिन छात्र को गृहकार्य दें तथा प्रतिदिन उसकी जाँच करें और छात्र की प्रगति के बारे में तथा उपस्थिति के बारे में अब अवगत करायें।
अभिभावक चाहते हैं कि विद्यालय उनकी समस्याओं को समझे।

षिक्षक विद्यार्थियों को मन से व समर्पण भाव से पढ़ायें व व्यक्तिगत निर्देशन और अतिरिक्त कक्षाऐं आवश्यकतानुसार निःशुल्क उपलब्ध करायें तथा विद्यालय द्वारा अतिरिक्त पाठ्य सहगामी क्रियाओं की व्यवस्था की जाये।

Miller, Anita Lynne (1999) ने अपने षोध में बताया कि अभिभावकों का मानना है कि षैक्षणिक योग्यता की बजाय कठिन परिश्रम व प्रयास अधिक महत्वपूर्ण है। अभिभावकों का षैक्षिक स्तर जितना ऊँचा होता है उतनी ही वे अपनी बच्चों से अधिक अपेक्षा रखते हैं।

अभिभावकों का विष्वास है कि षैक्षणिक उपलब्धि इस निष्कर्ष से प्रभावित होती है कि उनके बच्चे ने अपनी योग्यतानुसार कितने प्रयास किये हैं।

Hurley (1985) ''माता–पिता से ध्यान न प्राप्त करने वाले बालक कम अंक प्राप्त करते हैं।
माता–पिता अपने प्रतिभाशाली बालक की किस प्रकार मदद कर सकते हैं इस बारे में कुछ विद्वानों ने कुछ किताबें लिखी हैं जिनमें प्रमुख हैं–

& Ginsberg & Harrison (1977) की पुस्तक **"How to help your gifted child".**
& Strang (1960) की पुस्तक **"Helping your gifted child".**
& Pickard (1976) की पुस्तक **"If you think your child is gifted"**

Ginsberg & Harrison (1977) ने निष्कर्ष दिया कि ''अभिभावकों को अपने प्रतिभाषाली बालक से यह अपेक्षा नहीं रखना चाहिए कि वह हर समय या हर काम में अपनी प्रतिभा दिखाये।
माता–पिता की ऐसी अपेक्षा से प्रतिभाशाली बालकों में हीन भावना उत्पन्न होगी और यह हीन भावना उनकी अन्य उपलब्धियों पर नकारात्मक प्रभाव डालेगी।''

Calangelo, N., Dettmann, D. F. ने पाया कि ''प्रतिभाषाली बालक के माता–पिता यदि उन ध्यान न दें उनका उपलब्धि स्तर कम हो जाता है।''
''प्रतिभाषाली बालक अन्य बालकों की तुलना में अपने माता–पिता के सामने अनेक चुनौतियाँ व समस्यायें रखते हैं और वे ये भी बताते हैं कि शिक्षाविद् इन चुनौती व समस्याओं के बारे में माता–पिता को कोई सही दिशा प्रदान नहीं करते हैं''।

उपर्युक्त अनुसंधानों को देखने पर पता चलता है कि प्रतिभाशाली बालकों की माता–पिता व शिक्षकों से अपेक्षाओं पर कम अनुसंधान कार्य हुए हैं। इसी कारण इस विषय को अनुसंधान के लिए चुना गया है।

षोध कथन :– ''ग्वालियर के षासकीय एंव अषासकीय विद्यालयों के प्रतिभाषाली विद्यार्थियों की अपने माता–पिता और षिक्षको से अपेक्षाओं का तुलनात्मक अध्ययन।

(कक्षा दसवीं के विषिश्ट संदर्भ में)''।

उद्देष्य :1. षासकीय एंव अषासकीय विद्यालयों के प्रतिभाषाली विद्यार्थियों की अपने माता–पिता और षिक्षको से अपेक्षाओं का तुलनात्मक अध्ययन

- षासकीय विद्यालयों के प्रतिभाषाली विद्यार्थियों की अपने माता पिता व षिक्षकों से अपेक्षाओं का पता लगाना।
- अषासकीय विद्यालयों के प्रतिभाषाली विद्यार्थियों की अपने माता–पिता व षिक्षकों से अपेक्षाओं का पता लगाना।

परिकल्पना :–

1. षासकीय व अषासकीय विद्यालयों के प्रतिभाषाली विधार्थियों की अपने माता पिता व षिक्षकों से अपेक्षाओं में कोई सार्थक अन्तर नही है।

षोध की विधिः–

षोधार्थिनी ने अध्ययन हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया।

न्यादर्ष :–

षोधार्थिनी ने अपने अध्ययन में न्यादर्ष स्वरूप शासकीय व अशासकीय विद्यालयों के 400 विद्यार्थियों में से 100 प्रतिभाशाली छात्रों को चयन किया। जिनका चयन बुद्धि परीक्षण (डॉ. ष्याम स्वरूप जलोटा) द्वारा किया गया है। तत्पश्चात् उच्च उपलब्धि वाले 100 विद्यार्थियों पर स्वनिर्मित परीक्षण 'अपेक्षा परीक्षण' का प्रयोग किया गया। जिनमें 50 विधार्थी ग्वालियर शहर के षासकीय विद्यालयों से व 50 विद्यार्थी अषासकीय विद्यालयों से लिये गयें है।

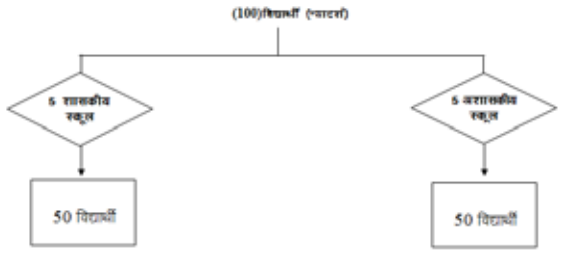

षोध में प्रयुक्त उपकरण :– षोधार्थिनी ने बुद्धि परिक्षण (डॉ. एस.एस.जलोटा) तथा स्वनिर्मित प्रष्नावली (अपेक्षा परीक्षण) को अपने अध्ययन में उपकरण के रूप में प्रयुक्त किया है।

उपकरण का प्रषासन :– प्रस्तुत अध्ययन में षोधार्थी ने सर्वप्रथम बुद्धि परीक्षण का प्रयोग 400 विद्यार्थियो पर किया। तत्पष्चात उच्च उपलब्धि (40: से अधिक) वाले 100 विद्यार्थियों पर स्वनिर्मित प्रष्नावली (अपेक्षा परीक्षण) का प्रयोग किया। जिनमें 50 विद्यार्थी षासकीय विद्यालयों के व 50 विद्यार्थी अषासकीय विद्यालयों थे।

सांख्यिकीय प्रविधियाँ :– प्रस्तुत अध्ययन में षोधार्थिनी प्रदत्तों के विष्लेशण के लिये प्रतिषत विधि, मध्यमान, मानक विचलन, टी–परीक्षण व लेखाचित्रीय विधि का प्रयोग करती है।

तालिका क्रमांक 4.5

षासकीय एवं अषासकीय विद्यालयों के प्रतिभाषाली विद्यार्थियों के मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–परीक्षण का वितरण

षासकीय विद्यालयों के प्रतिभाषाली विद्यार्थी		अषासकीय विद्यालयों के प्रतिभाषाली विद्यार्थी		सार्थकता स्तर
M_1	SD_1	M_2	SD_2	ज . परीक्षण
121.9	12.3	120.3	8.2	0.77

रेखाचित्र

रेखाचित्र – 1 षासकीय विद्यालयों एवं अषासकीय विद्यालयों के प्रतिभाषाली विद्यार्थियों के अपेक्षा स्तर के मध्यमान का रेखाचित्र

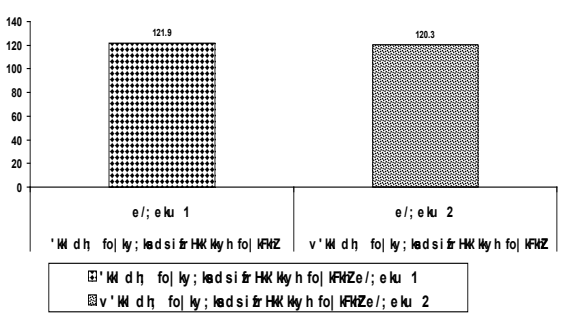

उपलब्धियाँ :– आंकडों के विश्लेशण द्वारा षासकीय व अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों से प्राप्त प्राप्तांकों के द्वारा मध्यमानों का अन्तर 1.6 है तथा टी–परीक्षण का मान 0.77 प्राप्त हुआ है। जो 0.01 व 0.5 सार्थकता स्तर पर तालिका में दिये मान से कम है। अतः हमारी षून्य परिकल्पना दोनों सार्थकता स्तरों पर स्वीकृत होती है। अतः कहा जा सकता है षासकीय व अशासकीय विद्यालयों के प्रतिभाषाली विद्यार्थियों की अपने माता–पिता व शिक्षाकों से अपेक्षाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

उपसंहारः– विश्लेषण से यह पता चलता है कि प्रतिभाशाली विद्यार्थियों की अपेक्षाओं पर षासकीय व अशासकीय विद्यालयों का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। हर प्रतिभाशाली बालक अपने माता–पिता व शिक्षकों से एक ही तरह की अपेक्षा रखते हैं। प्रतिभाशाली विद्यार्थियों की अपेक्षाओं को पूरा करने में व शैक्षिक विकास करने में माता–पिता व शिक्षक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

इस अध्ययन के अलावा हम विभिन्न आयु वर्ग के बालकों का अपेक्षाओं पर अध्ययन कर सकते हैं जिससे आयु परिवर्तन के साथ अपेक्षाओं मे परिवर्तन का पता लगा सकते हैं जिससे प्रतिभाशाली बालकों को अधिकाधिक दिया जा सके।

Volume : 4 | Issue : 6 | June 2014 | ISSN - 2249-555X

REFERENCE

1. COLANGELO,N., DETTMANN,D.F. 1983 Exceptional children, The council for exceptional children, vol. 50 No.1, pp.20-27. | 2. GINSBERG, G.& HARRISON, C. H., How to help your gifted child:A hand book for parents and teachers, Newyork:Monarch press, 1977. | 3.GOYAR, P. G. 1990 "A study of the expectations of the parents of the children and their wards concerning educational achievement. M.phil.,edu. Nagpur university. | 4.HURLEY, J. R., Parental acceptance rejection and children's intelligence. Mirrill-palmer quarterly 1985 . 11,19-31. | 5.MILLER,ANITA LYNNE 1999 "The effect of beliefs, perceptions and value on parent's expectations for their children's academic achievement.'"Ph.d., The Claremont Graduate univ.,pp.-240. | 6. PATHAK, P. D.,Educational psychology, Vinod pustak Mandir Agra-2 pg-460. |